बिहार-झारखंड से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों की कार्यशाला में दी गयी जानकारी

आठ करोड़ को किसान सारथी एप से जोड़ने का लक्ष्य

प्रतिनिधि, मानपुर गया जी

कार्यक्रम को संबोधित करते निदेशक डॉ अंजनी कुमार.

कार्यक्रम में शामिल बिहार झारखंड के वैज्ञानिक.

जिले के कृषि विज्ञान केंद्र मानपुर में सोमवार को आइसीएआर-अटारी पटना मुख्यालय के निर्देशन में बिहार-झारखंड से जुड़े कृषि वैज्ञानिकों की कार्यशाला हुई. कार्यशाला में किसान सारथी 2.0 डिजिटल एप से किसानों को जोड़ने व खेती-किसानी में उसे डिजिटल तकनीक (मोबाइल फोन) से खेती बाड़ी, बागवानी, पशुपाल, फलदार उत्पादन के साथ कीट पतंग नियंत्रण पर सलाह देने पर जागरूकता कार्यशाला हुई.

इसमें बिहार झारखंड राज्य से जुड़े वैज्ञानिकों ने मंथन किया. कार्यशाला में मुख्य अतिथि सह आइसीएआर-एटीएआरआइ पटना के निदेशक डॉक्टर अंजनी कुमार, किसान सारथी 2.0 के शोध प्रमुख सह प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर डीबी सिंह, डॉक्टर केके चतुर्वेदी, डॉक्टर एसबी लाल, किसान सारथी डीआईसी के प्रबंधक पी शैलू मोदीराज, डॉक्टर बिमलेश कुमार पांडेय ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया. मुख्य अतिथि सह निदेशक डॉ अंजनी कुमार ने बताया कि बिहार झारखंड में एक माह के दौरान आठ करोड़ किसानों को किसान सारथी 2.0 डिजिटल एप से जोड़ने का काम करें.आ प जिले के संबंधित जिला प्रशासन व जिला कृषि पदाधिकारी से संपर्क कर किसानों का नाम, पता, मोबाइल नंबर लेकर एप से जोड़ने के साथ उसे बेहतर तकनीक आधारित कृषि करने पर बल दें. कार्यशाला में मौजूद लोगों ने बताया कि अबतक मात्र तीन करोड़ लोगों को ही जोड़ा गया, जो काफी उम्मीद से कम है. क्या है किसान सारथी 2.0 एप यह एप किसानों को घर बैठे समय समय पर उसे उन्नत प्रभेद चयन, समय पर खाद, रोग नियंत्रण, पशुओं को रोग से बचाने, मछली पलक, मुर्गी पलक, डेयरी पलक, मधुमक्खी पालक, फलदार खेती करने वालों के साथ मिलेट (मोटे अनाज) उत्पादन, भंडारण के साथ उसके घरेलू स्तर पर फूड प्रोसेसिंग कर अधिक मुनाफा कमाने पर जानकारी मोबाइल पर मिलती रहेगी. अप बिहार झारखंड के स्थानीय वैज्ञानिकों से इस इप के माध्यम से अपनी जरूरतों के आधार पर समय समय पर सलाह ले सकेंगे. कितने बिहार व कितने झारखंड से जानकारी अनुसार, बिहार के 512 प्रखंडों के 32118 गांवों के 42.81 लाख किसान तथा 144 कृषि विशेषज्ञ जुड़े हैं. झारखंड में 261 ब्लॉक के 20998 गांवों के नौ लाख 27 हजार किसानों को जोड़ा गया है और कुल 71 कृषि वैज्ञानिक इस क्षेत्र में काम कर रहे हैं.

मखाना व लीची पर विशेष चर्चाइस कार्यशाला में बिहार के लीची व मखाना उत्पादक व उसके प्रोसेसिंग पर विस्तार पूर्वक चर्चाएं होती रहीं. क्योंकि, दोनों फसलों को राज्य व केंद्र सरकार की तरफ से जी आयी टैगिंग दिया गया है. 13 भाषाओं में हो रहा कामकार्यशाला में मौजूद वैज्ञानिकों ने बताया कि देश के अंदर विभिन्न राज्यों की अलग-अलग भाषाएं हैं. अब तक 12 भाषाओं में किसान सारथी 2.0 एप किसानों को उसकी सहूलियत आधार पर भाषाओं में जवाब देता है. कार्यक्रम में नयी दिल्ली से आये वैज्ञानिक डॉक्टर सुधीर कुमार, रांची से आये डॉक्टर मोहमद मान सुल्लाह, जिला कृषि पदाधिकारी संजीव कुमार, कृषि विज्ञान केंद्र मानपुर के प्रधान वैज्ञानिक इंजीनियर मनोज कुमार राय, कृषि विज्ञान केंद्र आमस के प्रधान वैज्ञानिक इंजीनियर विमलेश कुमार पांडेय, डॉक्टर अनिल कुमार रवि, डॉक्टर रश्मि प्रियदर्शिनी, डॉक्टर फरहान खातून, डॉक्टर मोनिका पटेल, डॉक्टर अशोक कुमार, डॉक्टर सुनील कुमार चौधरी समेत बिहार झारखंड से जुड़े वैज्ञानिकों की टीम मौजूद रही.